कहानी

टॉरनेडो

※ सुधा ओम ढींगरा ※

'मॉम, मुझे आपके ब्वाय फ्रेंड अच्छे नहीं लगते, आप दोस्त न बनाया करें।'' डिनर के बाद क्रिस्टी ने बड़े प्यार से, लाड़ से जैनेफर के गले में बाहें डालते हुए कहा।

''फ्रेंड बनाना बुरी बात तो नहीं।'' जैनेफर मेज पर से बर्तन उठाते हुए बोली।

''पर सोनल की मम्मी का तो कोई ब्वाय फ्रेंड नहीं।'' जैनेफर के पीछे-पीछे जाती क्रिस्टी बोलती गई।

'तुम्हें क्या पता, कोई होगा।'' जैनेफर ने रात के खाने के बर्तन डिश वाशर में डालते हुए, अनमने मन से जवाब दिया।

''मॉम, मिसिज शंकर का कोई दोस्त नहीं, सोनल ने बताया है।'' क्रिस्टी ने अपनी बात पर जोर डाला।

''तो मिसिज शंकर एब्नॉर्मल हैं। इस उम्र में साथ तो चाहिए ही। मिसिज शंकर व और मेरा कोई मुकाबला नहीं।'' जैनेफर ने डिश वाशर बंद करते हुए, उखड़े अंदाज में बात समाप्त की।

''मॉम, मैं मुकाबला नहीं कर रही, पर डैड की जगह कोई और ले...।''

जैनेफर ने क्रिस्टी की बात बीच ही में काट दी।

''क्रिस्टी, बहुत बातें हो गई, चलो अब चल कर सो जाओ। बेड टाइम।'' जैनेफर उसे उसके कमरे की ओर ले जाते हुए बोली।

बिस्तर में अच्छी तरह क्रिस्टी को ढाँप कर, उसने उसके गालों को सहलाया और फिर स्नेह से चूम लिया....

''गुड नाइट, स्वीट हार्ट, रात की प्रार्थना करना नहीं भूलना।''

''मॉम, स्टोरी।''

''नो, स्वीटी आज नहीं- कल मुझे सुबह जल्दी जाना है। तुम भी सो जाओ। फिर सुबह तुमसे उठा नहीं जाता।'' कहते हुए नाइट बल्ब जला कर, वह कमरे से बाहर आ गई।

वैसे तो क्रिस्टी दस वर्ष की है। अमरीकी परिवारों के बच्चे इस उम्र में काफी कुछ समझने लगते हैं। खासकर लड़कियाँ जल्दी परिपक्व हो जाती हैं। क्रिस्टी में अभी भी बालपन की सरलता और मासूमियत है। उसकी समझ में जैनेफर की बात नहीं आई। 'एबनार्मल' शब्द उसकी बुद्धि में अटक गया।

डैड के जाने के बाद, क्रिस्टी हर रात अपनी कल्पना में एक दुनिया बसाती है, और फिर उसी की सुखद अनुभूतियों में विचरण करती है। उसके डैड सोने से पहले, उसे कहानी सुनाया करते थे और अब वह स्वयं ही हर रोज एक नई कहानी गढ़ती है और खुद को सुनाते-सुनाते सो जाती है।

पहले उसने डैड से बात की- ''डैड, मॉम के पास मुझे कहानी सुनाने के लिए समय नहीं है, पर जॉन अंकल के लिए है। उनके साथ फोन पर बातें कर रही हैं। मुझे आवाज आ रही है। आप के जाने के बाद वे बहुत बदल गई हैं।''

फिर क्रिस्टी प्रार्थना करने लगी- ''जीसस, मेरी मॉम को एब्नार्मल कर दे, मुझे उनके ब्वाय फ्रेंड अच्छे नहीं लगते?''

धीरे-धीरे उसकी कल्पना आकार लेने लगी- जीसस ने उसकी मॉम को एब्नॉर्मल कर दिया है। वे स्कूल से उसे घर लेकर आती हैं। फिर खाने को पास्ता देती हैं। क्रिस्टी को वह पास्ता बहुत स्वाद लगता है, यम्मी, ऑसम.... वह उसका

सहारा कितना भी हो, अमरीकी जीवन शैली में रोजमर्रा का संघर्ष तो उसे अकेले ही करना पड़ता। संध्या होते ही उसे कुछ होने लगता, वेह बेचैन हो जाती। रात को उसके शरीर में हलचल होती, संवेदनाएं विचलित करतीं। पुरुष सन्सर्ग की इच्छा उसे कभी महसूस न होती पर भीतर कुछ मथता, सिहरन सी होती... हालाँकि व्योम उसके रोम-रोम में रम चुका है। उसका ध्यान ही उसे शांत कर देता, प्रेम की चरम परिधि पार कर व्योम उसकी आत्मा में समा चुका है, व्योम से जुड़े एक-एक पल को, उसने अपने भीतर संजो कर सहेज लिया है।.....

स्वाद लेती है। उसकी मॉम उसे देख-देख कर खुश होती हैं।

''क्रिस्टी, मेरी प्यारी क्रिस्टी'' कह कर वे प्यार से उसे बाँहों में भर लेती हैं। अब वे उसका बैक-पैक खोलती हैं। होम वर्क देखती हैं। बड़े स्नेह से उसकी गाल पर 'किस' देकर कहती हैं- ''माई एंजल, जाओ अब बाहर जाकर खेलो।'' क्रिस्टी खिल उठती है।

''सोनल की मम्मी तो रोज ऐसा करती , वे एब्नॉर्मल हैं। अब उसकी मॉम भी एब्नॉर्मल हो गई हैं।'' अपने आप से बात करती, कल्पना का आनंद लेती और प्रसन्न मुद्रा में ही वह गहरी नींद में चली गई।

जैनेफर की तीखी आवाज ने उसे जगाया- ''उठ देर हो रही है, जल्दी कर।''

आवाज से ही क्रिस्टी भाँप गई, कल फिर जॉन अंकल से मॉम का झगड़ा हुआ है। तभी मॉम चिड़चिड़ी हैं। क्रिस्टी चुपचाप अपने दैनिक काम करने लग गई। सुबह-सुबह मॉम डाँटे, उसे अच्छा नहीं लगता। सारा दिन उसका मूड खराब रहता है और सहेलियों से भी झगड़ा हो जाता है। रात को ही वह नहाई थी। ब्रश करके, कपड़े बदलकर, आधे घंटे में तैयार होकर, वह नीचे रसोई में आ गई।

जैनेफर ने बेहद खामोशी से उसे लॉच बाक्स पकड़ाया। ऐसे समय में क्रिस्टी भी ज्यादा बात नहीं करती। छोटी उम्र में ही, कई बातें वह समझने लगी है। जैनेफर ने उसे दरवाजे तक छोड़ा और वह घर के आगे आकर खड़ी हो गई, जहां से स्कूल बस उसे रोज स्कूल ले जाती है।

क्रिस्टी बस में सारे रास्ते सोचती रही- ''काश! उसकी मॉम सचमुच वन्दना आंटी की तरह एब्नॉर्मल हो जाए।'' पर स्कूल पहुंच कर, सोनल को देखते ही, वह सब कुछ भूल गई।

सोनल और क्रिस्टी किंडर गार्डन से सहेलियाँ हैं, दोनों में बहुत समानता है, दोनों का जन्म रैक्स हस्पताल में हुआ। क्रिस्टी सोनल से एक दिन बड़ी है, अभी दसवें वर्ष में प्रवेश किया ही था, कि क्रिस्टी के डैडी पीटर की, कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई और सोनल के डैडी के ब्रेन ट्यूमर का पता चला। छह महीने के भीतर ही सोनल के डैडी व्योम इस दुनिया से चले गए।

दोनों अपने-अपने डैडी की अनुपस्थिति से आए शून्य से जब विचलित होतीं, तो स्कूल में लंच समय उनकी बातें करतीं- '' सोनल पता है, जब मैं साइकल चलाती थी, तो डैडी मेरे साथ-साथ भागते थे। अगर गिर जाती, एकदम से पकड़ लेते, मुझे चोट नहीं लगने देते थे।''

''क्रिस्टी, मेरे डैडी ने तो झूले के नीचे, खूब सारी रेत बिछा दी थी। जब मैं झूले पर बैठती थी, वहीं फैला कर खड़े रहते थे, उन्हें डर लगता था कि कहीं मैं झूले से गिर न जाऊँ।''

लंच में, क्रिस्टी को, सोनल का आलू का पराठा बहुत अच्छा लगता। वह अपना सैंडविच वहीं गारबेज में फेंक देती और सोनल का पराठा खाती। वन्दना क्रिस्टी के लिए भी एक पराठा लंच बाक्स में डाल देती। जैनेफर को जब पता चला, उसे अच्छा तो नहीं लगा, पर वह सोनल और क्रिस्टी के प्यार, उनकी दोस्ती को स्वीकार कर चुकी थी, इसलिए कुछ बोली नहीं।

गोरी-चिट्टी बेहद खूबसूरत जैनेफर ने पीटर की मौत के डेढ़ महीने बाद ही डेटिंग शुरू कर दी। क्रिस्टी बौखला गई। वह अपने डैडी की जगह किसी और को नहीं देखना चाहती। उसकी पढ़ाई प्रभावित होने लगी। क्रिस्टी की टीचर मिसिज रोजवेल्ड ने कई बार जैनेफर को पत्र लिखा, क्रिस्टी की पढ़ाई के बारे में सूचित किया। जैनेफर को स्कूल भी बुलाया। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि वह क्या करे? कैसे उसे संभाले? क्रिस्टी अपने डैडी को बहुत याद करती, बिना बात के जिद करती और कभी रोती, उसे जैनेफर के साथ की जरूरत है और जैनेफर के पास समय की ही कमी है। वह वाल मार्ट में सुपर वाइजर है, पर वेतन घंटों के हिसाब से मिलता है। गृहस्थी के खर्चे, मकान का किराया, बिजली और पानी का बिल देने के लिए उसे ओवर टाइम करना पड़ता है।

जैनेफर और पीटर का पूरा परिवार डरहम में रहता है, पर उसकी मदद कोई नहीं करता। पढ़े-लिखे न होने की वजह से छोटी-मोटी नौकरियाँ कर गुजारा कर रहे हैं। एक-दूसरे का साथ देने के लिए उनके पास ना समय है, ना पैसा। जैनेफ

और पीटर दोनों की माएं अकेली थीं। उनका बचपन बड़ा ही संघर्षमय बीता था। वैसा बचपन वह क्रिस्टी को नहीं देना चाहती। क्रिस्टी को स्कूल के बाद डे केयर में जाना ही पड़ता। क्रिस्टी के साथ शाम को घर में होते हुए भी, उसे घर खाने को दौड़ता है। उसे पुरुष साथ की इच्छा होती। उसे पीटर की कमी खलती। जब भी वह किसी पुरुष मित्र को घर बुलाती तो क्रिस्टी को उसके कमरे में भेज देती। क्रिस्टी अकेली हो जाती, वह यह तो टी.वी. पर सैसमी स्ट्रीट देखती या स्कूली डूबी डू। कई बार वह अपनी दो बार्बी डॉल को सोनल और क्रिस्टी बनाकर, अपने आप से बातें करती।

वह उदास रहने लगी और अपनी सब बातें सोनल को बताती। सोनल का मन क्रिस्टी के लिए दु:खी हो जाता और वह माँ के पास रोती। वंदना से सोनल का दु:ख देखा नहीं गया, उसने बहुत सोच-विचार के बाद जैनेफर से बात की और स्कूल के बाद, डे केयर की बजाए, वह सोनल के साथ उसे घर लाने लगी। शाम को, काम से घर आते समय, जैनेफर, सोनल के यहाँ से उसे वापिस अपने घर ले जाती। वन्दना के स्नेह की बौछारों तले क्रिस्टी की उदासी दूर हो गई और वह खुश रहने लगी।

गेहुंएं रंग की पतली दुबली वन्दना, आईबीएम में मैनेजर है और व्योम डायरेक्टर थे। व्योम के देहांत उपरांत, कम्पनी ने उसे, घर से काम करने की छूट दे दी थी। दोनों आईटी से जुड़े हुए थे। आईआईटी कानपुर में ही तो दोनों की दोस्ती हुई थी। दोस्ती कब प्यार में बदल गई, पता ही नहीं चला। दोनों ने एक-दूसरे को हृदय की गहराइयों से चाहा था। कई वर्षों की दोस्ती के बाद शादी की थी। व्योम के बाद वन्दना टूट गई। कई दिनों तक वह बहुत रोई, तड़पी, बिलखी, चिल्लाई पर व्योम को वापिस ना ला पाई। वह स्वभाव से कर्मठ है और सोनल का चेहरा देख कर वह फिर हिम्मत से खड़ी हो गई। वन्दना के माँ-बाप चाहते थे कि वह भारत वापिस आ जाए। उन्हें चिंता थी, अमेरिका में सोनल

को वह अकेली कैसे पालेगी? वन्दना ने अमेरिका में रहना ही उचित समझा, फिर व्योम का बड़ा भाई शुभम, भाभी सुमन और माँ-बाबू जी भी तो यहीं चैपल हिल में रहते हैं। वन्दना को उनका बड़ा सहारा है।

सहारा कितना भी हो, अमरीकी जीवन शैली में रोजमर्रा का संघर्ष तो उसे अकेले ही करना पड़ता। संध्या होते ही उसे कुछ होने लगता, वह बेचैन हो जाती। रात को उसके शरीर में हलचल होती, संवेदनाएं विचलित करतीं। पुरुष सान्निध्य की इच्छा उसे कभी महसूस न होती पर भीतर कुछ मथता, सिहरन सी होती... हालाँकि व्योम उसके रोम-रोम में रच चुका है। उसका ध्यान ही उसे शांत कर देता, प्रेम की चरम परिधि पार कर व्योम उसकी आत्मा में समा चुका है, व्योम से जुड़े एक-एक पल को, उसने अपने भीतर संजो कर सहेज लिया है।

ऐसे भावुक क्षणों में उसे कई बार जैनेफर की बात याद आ जाती- "मिसिज शंकर एबनार्मल है?" क्रिस्टी उसे बता चुकी थी।

अगले ही पल वह मुस्करा पड़ती- अमरीकी लोग, प्रीत की आन्तरिक समाधि को कहाँ समझ सकते हैं? जहाँ शारीरिक इच्छा गौण हो जाती है, दैहिक सुख के आगे वे सोच ही नहीं पाते? वह भी अपने ही भीतर समाई प्रेम की पराकाष्ठा और उससे उत्पन्न हुए भावों को कब समझ पाई थी; जब तक उसने लियो बुस्कालिया की 'लव' और डॉ. जोसफ मर्फी की 'दी पावर ऑफ यौर सब कांश्यस माइंड?' नहीं पढ़ी थी। व्योम उससे अलग कब था? वह व्योम ही तो बन चुकी थी। कभी-कभी वन्दना सोचती, शायद श्याम भी मीरा में ऐसे ही समाए होंगे। आन्तरिक समन्वय प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित कर देता है, उसकी लौ पूरा बदन प्रेममय कर देती है, फिर बाहरी सुख की इच्छा नहीं रहती। उसने जैनेफर को ये पुस्तकें पढ़ानी चाहीं, उसने उन्हें देख कर दूर रख दिया। उसे सिर्फ एक-दो ही शौक थे, परिवार की शिकायतें और डेटिंग की बातें करना।

क्रिस्टी के मिडल स्कूल जाने तक,

जैनेफर ने कई पुरुषों से डेटिंग की, जोन, जान, स्टीव, माईकल... क्रिस्टी अब इन सब बातों की आदी हो चुकी है। जैनेफर जब किसी ब्वाय फ्रेंड को घर लाती, क्रिस्टी सोनल के घर चली जाती। वह तो वैसे भी ज्यादातर वहीं रहती। क्रिस्टी सोनल के साथ भारतीय फिल्में देखने लगी और शाहरुख और सलमान खान की फैन हो गई। बालीवुड संगीत उसे बहुत पसंद आने लगा। 'हिन्दू सोसाइटी' और सांस्कृतिक संस्था 'हम सब' के कार्यक्रमों में वह सोनल के साथ फिल्मी गीतों पर नाचने भी लगी।

जीवन की भागदौड़ और लड़कियों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने, लाने में वन्दना कई बार थक जाती। काम का बोझ जब बढ़ जाता और वह अपने काम की मीटिंग्स को छोड़ कर निकल न पाती तो बाबू जी लड़कियों को स्कूल से घर ले आते। उन्हें नाश्ता खिलाकर फिर कभी कत्थक, कभी ताइक्वांडो, कभी पियानो, कभी वैले सिखाने ले जाते।

वन्दना की आँखें सजल हो जातीं, जब बाबूजी उसके सिर पर हाथ रख कर कहते- "बेटी थक गई आज, जल में अपने हाथ से चाय पिलाता हूँ।" और मसालेदार चाय का एक गर्मागर्म कप उसे पीने को देते। उसके अपने पिताजी ने तो चारों बहनों की ओर कभी देखा भी नहीं था, जब तक उसकी माँ ने बेटा नहीं जना। उसके बाद ही वे मुस्करा पाई थी और उसके साथ ही मुस्कराई थीं, वे चारों बहनें। वह माँ-बाप के पास शायद इसलिए भी नहीं जाना चाहती थी कि उसके भी लड़की है।

बाबू जी अक्सर मिताली द्वारा गाई, उसकी मनपसन्द गजल- "वक्त ने तन्हा कर डाला तो गम न कर...।" लगा देते, वन्दना के चेहरे की उदासी छंट जाती और बाबू जी मुस्करा पड़ते।

अमरीका में समय बीतता नहीं, भागता है। देखते ही देखते लड़कियाँ हाई स्कूल में चली गईं। एक दिन वन्दना जब लड़कियों को स्कूल से लेने गई। कार में बैठते ही क्रिस्टी ने बड़ी उमंग के साथ कहा- "वन्दना आंटी, जय पटेल ने आज सोनल को डेट पर जाने के लिए पूछा।"

यह सुनते ही वन्दना के पैर ब्रेक्स पर जोर से पड़े, अगर लड़कियों ने सीट बैल्ट न बाँधी होती तो उनके सिर सामने की सीटों पर लगते। वन्दना विचलित हो गई थी। क्या लड़कियाँ इतनी बड़ी हो गई हैं। कुछ ही क्षणों में उसने अपने आपको सम्भाला- "गर्ल्स, आर यू ओ.के. सॉरी।"

वन्दना अपनी जिज्ञासा रोक नहीं पाई, सहज होकर पूछ ही लिया- "फिर सोनल ने क्या कहा?" सोनल चुप रही। क्रिस्टी ने चहकते हुए कहा- "आंटी, मना कर दिया, हमें याद है, आप ने कहा था- नो डेटिंग इन हाई स्कूल। एस.ए.टी. के स्कोर बढ़िया लेने हैं ताकि आई वी लीग (उत्तम कॉलेज) में दाखिला मिल जाये।' वन्दना ने राहत की सांस ली।

रात भर वन्दना सो नहीं सकी, उसे व्योम की बहुत याद आई। सोनल को उम्र की इस वय: संधि में वह अकेली कैसे सम्भाल पायेगी? रो पड़ी थी वन्दना। तभी व्योम की बात कानों में गूंजी- "जब जीवन में कोई विकल्प न रहे। परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए।"

"कहना बहुत आसान है। तुम तो कह कर चले गए मेरे लिए कितना मुश्किल है, तुम क्या जानो?" वन्दना बुदबुदाई और आँसुओं को पोंछने लगी।

उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था। एडविल की गोली ली और सोचने लगी- सोनल का सोलहवाँ जन्म दिन आने वाला है, शादी की तरह तैयारी करनी पड़ती है। वैसे तो जेठ-जेठानी ने हाल बुक करवा लिया था, केटरर से भी बात कर ली थी। पर तब भी काम बहुत हो जाता है। अच्छा कल जैनेफर से बात करूंगी। सजावट के लिए मंजू निगम को काल करना है। एडविल ने असर दिखाना शुरू कर दिया, उसकी आँखें भारी होनी शुरू हो गई, सोचते-सोचते वह नींद की आगोश में चली गई।

सुबह वन्दना का मन उदास और चित्त अस्थिर था, पर जन्मदिन की तैयारी ने उसका ध्यान बांट दिया।

अंत में वह दिन भी आ गया, जिसका सब को इंतजार था। जन्मदिन की पार्टी शुरू हो गई है... डी.जे. का मद्धम संगीत चल रहा है। क्रिस्टी और सोनल ने लहंगा पहना है। जैनेफर पंजाबी सूट पहन कर, अपने दोस्त केलब के साथ आई। लोग धीरे-धीरे आ रहे हैं। क्रिस्टी दो दिन से सोनल के घर पर ही है। वन्दना और सोनल दोनों महसूस कर रही हैं कि क्रिस्टी केलब को देख कर बहुत बेचैन हो गई है। उसने डी.जे. को पंजाबी संगीत चलाने को कहा, उसकी रिदम पर वह पागल की तरह नाच रही है। एक दो बार केलब उसके साथ नाचने आया, पर वह उससे दूर चली गई।

सोनल और क्रिस्टी का किशोर, निश्छल, मासूम यौवन, चेहरे का अप्रतिम सौन्दर्य पार्टी में चल रही रौशनियों को भी फीका और मद्धम कर रहा है। दोनों के लिए यह विशेष दिन है। दोनों सोलह साल की हुई है। अमेरिका में सोलहवें जन्मदिन का बहुत महत्व है, इस दिन लड़की किशोरावस्था और युवावस्था की संधि में आ जाती है। सोनल के दादा-दादी और ताऊ-ताई बार-बार बलाईयां ले कर खुश हो रहे हैं।

केलब की नजरें क्रिस्टी के बदन पर थिरक रही हैं। क्रिस्टी उनसे बचने का प्रयास कर रही है, कभी सहेलियों और कभी वन्दना के पास जाकर अपने आप को बचा रही है।

वन्दना उसे नजरअंदाज न कर सकी। वे नजरें गर्ल फ्रेंड की बेटी पर नहीं, एक उमड़ते यौवन पर उठती महसूस हुई। वन्दना परेशान हो उठी और जैनेफर को

ढूंढ़ने लगी। वह केलब से बेखबर रेड वाईन का ग्लास पकड़े, सोनल की दूसरी सहेलियों की माँओं के साथ बातें करने में व्यस्त है। इस दिन की एक और परम्परा है, करीबी सहेलियाँ, दोस्त या परिवार के सदस्य बर्थ डे गर्ल के लिए बोलते हैं। इससे पहले कि वन्दना उसके पास पहुँचती, जैनेफर हँसती हुई, छोटी सी बनाई गई स्टेज पर आ गई, और माइक पकड़ कर उसने बोलना शुरू कर दिया–

''सोनल के साथ–साथ क्रिस्टी को वन्दना ने जो संस्कार दिए, उसी के कारण वह सोनल की तरह हर क्षेत्र में अच्छा कर रही है। उसके व्यक्तित्व के निखार और आत्मविश्वास को देखकर, कई बार मुझे ईर्ष्या होती है। काश! मुझे भी कोई वन्दना जैसा गाइड और घनी छत मिली होती, जो मुझे कड़ी धूप, तेज बारिश से बचा सकती। मैं तो हाई स्कूल में ही पीटर के प्यार में पड़कर प्रेग्नेंट हो गई और शीघ्र ही शादी करनी पड़ी। जीवन के संघर्ष में ऐसे उलझे, आगे पढ़ भी नहीं पाए। वन्दना ने क्रिस्टी को वह सब दिया, जो मैं नहीं दे पाई। सबसे बढ़ कर शंकर परिवार ने हमें अपना हिस्सा बनाया।'' जैनेफर का गला भर गया, उससे बोला नहीं गया– ''गॉड अपना आशीर्वाद तुम दोनों पर सदा बनाये रखे, बस यही प्रार्थना करती हूँ।'' उसने क्रिस्टी और सोनल को गले लगाया और सिसक पड़ी। हॉल तालियों से गूँज उठा, सबकी आँखें गीली हो गईं वन्दना की आँखें भी नम हो गईं।

केलब भी दोनों को गले लगाने उठा। पर क्रिस्टी सोनल का हाथ पकड़ कर दूर हट गई। बड़े अंदाज से उसने झुक कर, हाथ जोड़कर, ''नमस्ते'' कहा। यह सब उसने इतने ढंग से पेश किया कि लोगों की हँसी निकल गई, केलब खिसिया कर बैठ गया। वन्दना हँस नहीं सकी। क्रिस्टी के अभिनय के बाद, वह क्रिस्टी के चेहरे की कठोरता को भाँप गई। क्रिस्टी उसी रात अपने घर नहीं गई, सोनल के यहाँ ही रूक गई। सोनल समझ नहीं पा रही आखिर क्रिस्टी को क्या हुआ है?

वन्दना सारी रात असहज रही। उसके भीतर की औरत अंतर्ज्ञान किसी अनहोनी के घटित होने का संकेत दे रहा है। भोर की पहली किरण ने धरा अभी छुई भी नहीं थी कि सोनल ने वन्दना को जगाया–

''मम्मी उठिए, क्रिस्टी सारी रात तड़पती रही, उसे बहुत तेज बुखार है।''

''पर तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं?''

''आप थकी हुईं थीं, इसीलिए नहीं जगाया। क्रिस्टी ने भी आप को जगाने से मना कर दिया था।''

वन्दना ने जल्दी से नाइट गाउन डाला और सोनल के कमरे की ओर तेजी से चल पड़ी।

क्रिस्टी को बुखार है, थर्मा मीटर लगाया तो 101 डिग्री निकला। बुखार से ज्यादा वन्दना ने क्रिस्टी के चेहरे पर रोष, आक्रोश और शरीर में गुस्सा महसूस किया। वन्दना ने क्रिस्टी का चेहरा अपने नर्म हाथां में लेकर, उसकी आँखों में आँखें डाल कर पूछा– ''क्रिस्टी, केलब ने तेरे साथ क्या किया?''

इतना सुनते ही क्रिस्टी वन्दना से लिपट कर फफक पड़ी....

रोते–रोते उसने पूछा– ''आपको कैसे पता?''

''माँ का अंतर्ज्ञान...'' वंदना ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा।

''पर मेरी माँ को क्यों नहीं पता चला?'' क्रिस्टी के इस प्रश्न पर वन्दना बोली नहीं।

वन्दना उसके सिर पर हाथ फेरने लगी, उसके स्नेह ने उसे सहजकर दिया, और भीतर का लावा पिघलने लगा...।

धीरे–धीरे वह बोली– ''आंटी, दो दिन पहले केलब अंकल, मॉम को डिनर के लिए लेने आए। वे बाथरूम में थीं। मैं उन्हें लिविंग रूम में बैठने को कह कर मुड़ने लगी, तो वे मेरे सामने आ खड़े हो गए। उन्होंने मेरे उरोज दोनों हाथों से कस कर पकड़ लिए, मेरी चीख निकल गई– अचानक वार था, सम्भल नहीं पाई। उन्होंने मेरा वक्ष छोड़ कर, मेरे मुंह पर हाथ रख कर जकड़ लिया और बोले– अगर आवाज निकाली या किसी को बताया, तो जान से मार दूंगा। मैं कली को खिलने का भरपूर समय देता हूँ, साथ दोगी तो माँ–बेटी दोनों को अथाह सुख दूंगा, नहीं तो तुम्हारे यौवन के उतार–चढ़ाव पार करना मेरे लिए कठिन नहीं है।''

''तुमने जैनेफर को बताया नहीं?''

''मैं बहुत गुस्से में थी... और मॉम को बताने का समय भी नहीं था। मैंने अपना सामान उठाया और यहाँ चली आई।''

''ताइक्वांडो, किस दिन के लिए सीखा है? तुम दोनों ब्लैक बेल्ट हो।'' वन्दना ने उसका डर निकालते हुए कहा।

''आंटी, इसी बात का तो दु:ख है, मैं उसे बेल्ट नहीं दिखा पाई। उम्र भर कलियों की खुशबू से भी डरता।''

क्रिस्टी कुछ क्षणों के लिए चुप हो गई, जैसे कुछ कहने से पहले, अपने विचारों को समेट रही हो। वन्दना ने उसे पानी का ग्लास और एक बूफ्रिन की गोली दी।

थोड़ी देर बाद वह बोली– ''आंटी, मुझे डर है, इस बार मॉम मेरी बात का यकीन नहीं करेंगीं।''

''इस बार, क्या पहले भी कभी ऐसा हुआ है?''

''बचपन में, मॉम के दोस्त मुझे बच्चे की तरह रखते थे। ज्यों–ज्यों मैं बड़ी होनी शुरू हुई, कई दोस्त अच्छे आए और कई मुझमें कुछ ढूंढ़ते रहते। उनकी नजरों से तंग आकर मैं मॉम को बताती और वे उन्हें छोड़ देतीं। अब बढ़ती उम्र में वे असुरक्षित हो गई हैं। उन्हें लगता है कि दो साल बाद, मैं विश्वविद्यालय में पढ़ने कहीं दूर चली जाऊँगी। वे अकेली कैसे रहेंगीं? तभी केलब जैसे घटिया इन्सान के साथ जुड़ी हुई हैं।''

''तुम बात को टाल रही हो। क्या केलब ने पहले भी कुछ कहा था?''

वन्दना ने उसके चेहरे पर नजरें टिकाते हुए, दृढ़ता से पूछा।

''वे आँखों से मेरा शरीर उधेड़ते रहते हैं। मैंने जब मॉम को बताना चाहा, तो उन्होंने मेरी बात भी नहीं सुनी, हम दोनों का झगड़ा हो गया। माँ ने बहुत सी अनर्गल बातें कह दीं कि मैं माँ से ईर्ष्या करती हूँ, क्योंकि मेरा कोई ब्वाय फ्रेंड नहीं है। केलब अंकल बड़े चालाक हैं, उन्होंने पहले ही माँ को उकसा दिया है कि मैं स्वार्थी हूँ और उनकी शादी कभी नहीं होने दूँगी।'' क्रिस्टी बिना रूके बोलती गई–

''आँटी, दो साल बाद मैंने घर से चले ही जाना है, सोचती थी, किसी अच्छे आदमी से माँ शादी कर लें, तो मैं भी बाप का प्यार पा लूँ। उस स्नेह को महसूस कर लूँ। अब तो दो साल काटने भी मुश्किल लगते हैं।'' वन्दना ने देखा, उसकी आँखों में थकान उतर आई है। उसने उसका माथा दबाते हुए कहा– ''क्रिस्टी सो जा, शाम को बात करेंगे।'' और उसने कम्बल ठीक करके उस पर ओढ़ाया। थोड़ी देर बाद क्रिस्टी गहरी नींद में चली गई। वह भी सोनल के लिए नाश्ता बनाने चली गई।

गोधूली वेला में वन्दना पूजा करके उठी ही है, तभी जैनेफर आ गई। वन्दना ने उसे सारी बात बताई। वह चुप रही और क्रिस्टी को लेकर वहाँ से चली गई।

दूसरे दिन क्रिस्टी स्कूल नहीं गई और न जैनेफर काम पर। दोपहर तक दोनों खामोश रहीं। जैनेफर ने ही बात शुरू की– ''क्रिस्टी बात को समझने की कोशिश कर, मैं केलब के बिना नहीं रह सकती। मैं उसे बहुत प्यार करती हूँ। वह भी मुझे बहुत प्यार करता है... उसने वह सब दिया है, जो तुम्हारे डैड मुझे नहीं दे सके। कहीं कुछ गलतफहमी हुई है।''

''गलतफहमी, यह आप कह रही हैं! अपनी बेटी को... अमेरिका के कानून अनुसार मैं 18 साल तक अव्यस्क हूँ, पर प्रकृति ने मुझे पूर्णता प्रदान कर दी है। मैं बहुत कुछ सोचती, समझती और महसूस करती हूँ।''

''क्रिस्टी, तुम अभी भी बच्ची हो। यह सब तुम्हारे मस्तिष्क में वन्दना ने भरा है। वह तुम्हें हिन्दू बनाने पर तुली है।''

क्रिस्टी के चेहरे पर क्रोध की रेखाएं उभरीं... वन्दना की बात याद आते ही वह शांत हो गई– ''गर्ल्स, गुस्सा विवेक खो देता है। कोई बड़ा फैसला लेना हो या महत्वपूर्ण बात कहनी हो, तो शांत रहना चाहिए।''

क्रिस्टी ने नर्म होते हुए कहा– ''ऐसी बातें करके मेरे दिल से अपना सम्मान कम मत करें। आप भी जानती हैं, यह सही नहीं है। आप को तो यह भी पता नहीं, आपकी बेटी की किशोरावस्था कब पीछे छूट गई... उसे माहवारी कब आई और उस दिन उसने क्या महसूस किया? पहली ब्रा उसने कब खरीदी? इन सब का ख्याल मिसिज शंकर ने रखा, इससे जुड़ी सारी जानकारी मुझे दी, मुझे शिक्षित किया। केलब अंकल की भाषा न बोलें, मुझे सब समझ में आता है।'' यह सुन जैनेफर ढीली पड़ गई।

क्रिस्टी मधुर स्वर में कहती गई– ''माँ, आप जैसी भी हैं, मेरी माँ हैं। माँ–बाप चुने नहीं जाते। हमारे सीमित साधनों और आप की मजबूरियों को मैं भली–भाँति समझती हूँ। मैं दो विकल्प आप को देती हूँ। पहला, अगर आपको अभी शादी करनी है, तो मैं स्कूल के परामर्शदाता से बात करके, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सहायता से, किसी पोषक गृह (फोस्टर होम) में चली जाती हूँ। केलब अंकल के साथ मैं इस घर में नहीं रह सकती, मैं उनकी सूरत तक नहीं देखना चाहती। दूसरा, आप शादी के लिए मेरे 18 वर्ष की होने का प्रतीक्षा करें। जब मैं विश्वविद्यालय चली जाऊँगी, आप शादी कर लें। दो साल केलब अंकल इस घर में या घर के आस–पास भी नहीं आएँगे, अन्यथा मैं भूल जाऊंगी कि आप उनसे शादी करना चाहती हैं, 911 डायल करते मुझे देर नहीं लगेगी, पाँच मिनट में पुलिस पहुँच जायेगी। आप केलब को, उनके घर या बाहर मिल सकती हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं। आप की जरूरत मैं समझती हूँ।'' जैनेफर क्रिस्टी के दमकते चेहरे और दृढ़ आत्म–विश्वास के आगे झुक गई। क्रिस्टी यह कह कर, अपने स्कूल का काम करने चली गई।

जैनेफर सारी रात ममता और काया की कामना के अंतर्द्वंद्व में उलझी, जागती रही। एक तरफ केलब, जो अथाह दैहिक सुख देता है.... और उसकी लच्छेदार बातें, उसे जमीन से आसमान तक ले जाती हैं। उसने जीसस की कसम खाकर जैनेफर को विश्वास दिलाया था कि उसने क्रिस्टी के साथ ऐसा–वैसा कुछ भी नहीं किया। दूसरी तरफ बेटी... इतना बड़ा झूठ, वह नहीं बोल सकती, उसकी आत्मा नहीं मानती। ऊहापोह में उसे वन्दना पर गुस्सा आया। उसे अकेलापन क्यूं नहीं खलता? उसकी देह क्यों नहीं मांग करती? वह झुंझला गई।

उसने अपने बिस्तर के गद्दे के नीचे दबी किताब कामसूत्र निकाली, उसके

मुख पृष्ठ को बड़े प्यार से सहलाया.... बाकी पृष्ठों को उलट-पलट कर देखा। केलब ने बार्न्स एण्ड नोबल से उसे खरीदा था और जैनेफर के जन्म दिन का उपहार था, वह किताब। जन्म दिन वाली रात पुस्तक में चित्रित क्रियाओं का आनन्द उठा, उन्होंने चरम सुख पाया था। उन्हीं क्षणों की याद में वह खो गई.... किताब उसने सीने से लगा ली... कुछ देर तक वह सोचों की तरंग में बह गई... उसे अपना बदन भारी-सा महसूस होने लगा, आँसुओं से आँखें भर आईं।

फोन की घंटी ने उसकी तंद्रा तोड़ी, क्रिस्टी ने फोन उठा लिया है। उसे वन्दना की बात याद आ गई- ''जैनेफर, एक शरीर ही तो अपना होता है इसे अनुशासन में रखना जरूरी है, यह काम मस्तिष्क करता है। ध्यान ही दिमाग से सही सन्देश दिलवा सकता है। तुम मेडिटेशन किया करो, भटकना रुक जायेगा और सही दिशा मिलेगी।'' उस दिन जैनेफर चिढ़ गई थी।

अब भी यह सोच कर खीझ गई- ''मेडिटेशन, आन माय फुट, जैसे खाना-पीना शरीर के लिए जरूरी है, वैसे ही प्यार और सेक्स। एक पार्टनर चला जाए, दूसरा अपनी इच्छाएँ क्यों मारे? यह सब भावनाओं के दमन वाली बातें हैं। वन्दना को उसका दर्शन शुभ हो। वह तो है ही एब्नार्मल, मैं वैसी क्यूं बनूं?''

भीतर का रोष निकाल कर जैनेफर थोड़ा हल्का महसूस कर रही है, कनपटी से जबड़ों तक तनाव था।

क्रिस्टी ने अपने कमरे से सोनल को एस.एम.एस. भेजा- ''मम्मी को कहना, वह घबराएँ न, मुझे अपनी लड़ाई लड़नी आती है।

पर उसे लड़ाई लड़नी नहीं पड़ी। सुबह जब जैनेफर उठी, उसका चेहरा अत्यधिक बर्फबारी के बाद बादलों की ओट से उगते सूरज सा उजला और निखरा हुआ है। शायद किसी निर्णय पर पहुँच चुकी है।

स्कूल जाते समय जैनेफर ने क्रिस्टी को कहा- ''क्रिस, तुम आराम से दो साल पढ़ सकती हो। मुझे तुम्हारी सब बातें मंजूर हैं।'' क्रिस्टी मुस्करा दी, शायद उसे माँ के इसी निर्णय की प्रतीक्षा थी... पहली खिली सरसों सी दमकती वह स्कूल बस की तरफ भागी...।

क्रिस्टी ने बेबी सिटिंग शुरू कर दी, उसकी कई सहेलियाँ यह काम कर रही हैं। अमेरिका में पंद्रह-सोलह वर्ष के बाद लड़कियाँ स्कूल के उपरांत माँ-बाप की अनुपस्थिति में बच्चों की देख-रेख का काम करने लगती हैं। इससे उन्हें कुछ पैसे मिल जाते हैं और गर्मी की छुट्टियों में क्रिस्टी ग्रोसरी स्टोर में नौकरी भी करने लगी। इनसे कमाया पैसा, वह अपनी पढ़ाई के लिए जोड़ने लगी। एक बार केलब, उस ग्रोसरी स्टोर से ग्रोसरी लेने आया, जहाँ वह काम करती है, पर उसने क्रिस्टी की ओर देखा भी नहीं। दो-तीन बार वह उसकी मॉम को छोड़ने आया तो बाहर से ही चला गया। क्रिस्टी की असुरक्षित भावनाएं स्थिर होने लगी...।

दो साल बहुत तेजी से बीत गए.... सोनल को तो वह स्कूल से मिल ही लेती है, वन्दना के साथ भी वह जुड़ी हुई है। एस.ए.टी. की परीक्षा जिसके अंकों से कॉलेज में प्रवेश मिलता है, वन्दना की देख-रेख में दोनों ने उच्च स्तर में पास की। कॉलेज प्रविष्टि के फार्म भी वन्दना ने ही भरवाए। छयालिप्राम कॉलेजों से बुलावा आ गया है। सोनल ने बोस्टन विश्वविद्यालय को स्वीकृति भी भेज दी, वह डॉक्टर बनना चाहती है। आठ साल के सीधे डाक्टरी प्रोग्राम में उसे प्रवेश मिला है। क्रिस्टी ने दो कॉलेजों का चुनाव किया, जिनसे उसे आर्थिक सहायता और छात्रवृत्ति मिलने की आशा है। अभी उसने स्वीकृति किसी को भी नहीं भेजी। उसके पास अन्तिम निर्णय करने के लिए दो सप्ताह का समय है...।

भोर का पूँपट उठे अभी कुछ पल ही बीते थे, उसी समय सोनल ने लगभग चीखते हुए वन्दना को बुलाया- ''मॉम... कम अपस्टेयर इन माय रूम।'' आवाज सुनते ही वन्दना रसोई में से, भाग कर ऊपर गई।

सोनल के सामने कंप्यूटर खुला हुआ है और क्रिस्टी की एक बड़ी सी ई-मेल- जिसमें लिखा है-

वन्दना माँ,

इस संबोधन का अधिकार स्वयं ही ले रही हूँ। बहुत दिनों से, आपको इस तरह पुकारना चाहती थी, पर बुला नहीं पाई। तकरीबन सात बजे, कल रात मैंने घर छोड़ दिया। शाम के पाँच बजे, शरारती मुस्कान लिये केलब अंकल, मॉम के साथ शादी करके घर आ गए और आते ही माँ के तर्क शुरू हो गई। दो साल केलब ने हमारी बात मानी, आज उसकी सुन लो। वह मेरी कसम खाकर तुम्हें बेटी मानता है। इन गर्मियों में साथ रह कर परिवार और बाप का सुख ले लो, फिर तो तुम्हें चले ही जाना है। मॉम, अंकल की चाल में आ चुकी थीं। मैंने उनकी वही पुरानी नजरें, आँखों में तैरती प्यास की लहरें और चेहरे पर विजय के भाव पढ़ लिये थे। मैंने भी अभिनय किया, मुझे उनकी शादी की बहुत खुशी है और एक उत्सव के साथ नए जीवन की शुरुआत करना चाहती हूँ। रात का विशेष खाना बनाना चाहती हूँ और एक लम्बी-चौड़ी लिस्ट देकर, उन्हें ग्रोसरी लेने भेज दिया। जरूरी सामान उठाकर, मैंने घर छोड़ दिया... एक पत्र मॉम के लिए छोड़ आई हूं। कुछ पैसे मैंने जोड़े थे, वे इस समय काम आएंगे। किस कॉलेज में प्रवेश लूंगी, नहीं जानती, आपको बता दूँगी, पर मॉम और केलब अंकल को कभी नहीं और कुछ नहीं बताऊँगी। मुझे उम्र भर उनसे दूर रहना है। आप के पास आ सकती थी। आठरहवें जन्मदिन में तीन दिन बाकी हैं। केलब अंकल कमीने हैं... अव्यस्क को पथ भ्रष्ट करने का दोष लगाकर, आपको तंग कर सकते हैं। यशोदा मैया को ऐसे छोड़ूंगी, कभी सोचा न था। आपके

संस्कार और समय-समय पर दी गई नसीहतें ढाल और कवच का काम करेंगे, सोनल को संभालिएगा। वह मेरे इस तरह जाने से बहुत दुःखी होगी। आप मेरे हृदय में मंन्दिर की घंटी-सी-समाई हुई हैं। आपकी बातों की खनक कानों में गूँजती रहती है। माँ बहुत खुश हैं और मैं उनके लिए खुश हूँ। अब मैं उन्हें मिलूंगी नहीं। जीवन के लिए, जो सोचा है, उस लक्ष्य तक पहुँचना चाहती हूँ। जिस दिन कुछ बन गई, तब आपको मिलने जरूर आऊंगी... टेक केयर (खयाल रखियेगा)।

आपकी मुँह बोली बेटी, क्रिस्टी

सोनल पत्र पढ़ते-पढ़ते रो पड़ी... इससे पहले कि वन्दना उसे चुप कराती, डोर बेल बज उठी। दोनों हैरान हो गईं, इस समय कौन आया है? वन्दना जल्दी से नीचे गई, दरवाजा खोला, पुलिस अफसर के साथ केलब और जैनेफर को खड़े पाया। वन्दना बिना कुछ बोले संकेत से उन्हें सोनल के कमरे में ले आई और ई-मेल पढ़वा दी.... अफसर उन दोनों को घूरता सीढ़ियाँ उतर गया....

ऐसा लगा..... एक टॉरनेडो (प्रभंजन) आया और सब कुछ तहस-नहस कर गया। जैनेफर की आँखों से सीलन आ गई और बाहर बादलों ने भयंकर गर्जन के साथ, कहीं बिजली गिराई, तेज तूफान और आँधी अत्यधिक शोर मचाते महसूस हुए, सबके भीतर एक बवंडर चीख उठा.... बाहर और भीतर एक जैसी आवाजें सुनाई दीं....।■

लेखक संक्षिप्त परिचय : नाम : डॉ. सुधा ओम ढींगरा (कवयित्री, कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार, रंगमंच, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन कलाकार, समाज सेवी और हिन्दी के प्रचार-प्रसार की अनथक सिपाही)।

जन्म : 7 सितम्बर 1959, जालन्धर (पंजाब) के प्रतिष्ठित एवं साहित्यिक परिवार में हुआ। एम.ए., पी.एच.डी. करने के बाद 1982 में शादी कर सेंट लुईस (मिज़ूरी) आईं। हिन्दी, उर्दू और पंजाबी की चर्चित पत्रकार हैं। जालन्धर रंगमंच, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की कलाकार रही हैं। 1985 में इंडिया आर्टस ग्रुप की स्थापना की एवं हिन्दी नाटकों का मंचन। वर्तमान में इसकी संरक्षक एवं कलाकार हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति की ओर से सेंट लुईस में रेडियो प्रोग्राम कई वर्षों तक चलाया। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी सेंट लुईस (मिज़ूरी) में हिन्दी पढ़ाई। उपलब्धियाँ एवं प्राप्तियाँ : 1988-89 में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति का वार्षिक अधिवेशन सेंट लुईस (मिज़ूरी) में करवाया। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के अनेक पदों पर कार्य किया और कर रही हैं। हिन्दी विकास मंडल नार्थ कैरोलाईना की पूर्व अध्यक्ष। वर्तमान में हिन्दी विकास मंडल के न्यास मंडल की सदस्य। हिन्दू सोसाइटी, नार्थ कैरोलाईना की प्रोग्राम कमेटी की पूर्व - सभाध्यक्ष। 'विभूति' उत्पीड़ित नारियों के सहायतार्थ संस्था की संस्थापक एवं संरक्षक। 'इंडियन क्लासिकल एवं म्यूज़क सोसाइटी नार्थ कैरोलाईना की पूर्व निर्देशक। अनगिनत कवि सम्मेलन और संगीत कार्यक्रम करके भाषा, साहित्य और लोक-कलाओं, लोक-कलाओं को आगे बढ़ाया है। साथ ही साथ ऐसे महती काय में बहुत सी संस्थाओं के लिए बार-बार लगातार धन भी जुटाया है। प्रकाशन : मेरा दावा है (अमेरिका के हिन्दी कवियों का काव्य संग्रह), तलाश पहचान की (काव्य संग्रह), माँ ने कहा था (काव्य कैसेट), परिक्रमा (पंजाबी से हिन्दी में अनुवादित उपन्यास), सफर यादों का (काव्य संग्रह प्रकाशनाधीन), वसूली (कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन), और गंगा बहती रही (उपन्यास प्रकाशनाधीन), मेरा दावा है (भाग दो) -कार्य चल रहा है। काव्य सहयोग विश्वा तेरे - काव्य सुमन (सम्पादक गिरीश जौहरी), प्रवासी हस्ताक्षर (सम्पादक डॉ. अंजना संधीर), सात समन्दर पार से (सम्पादक डॉ. अंजना संधीर), पश्चिम की पुरवाई (सम्पादक डॉ. प्रेम जनमेजय, सत्यनारायण भाँवरा)। पत्रकारिता : संवाददाता -प्रवासी टाइम्स (यू.के.), स्तंभ लेखिका - शेरे-ए-पंजाब (पंजाबी), विदेशी प्रतिनिधी - पंजाब केसरी, जगवाणी, हिन्द समाचार, सम्मान : 21 सितम्बर, 1996 अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक काय के लिए वाशिंगटन डी.सी. में एम्बैसेडर नरेश चन्द्र से सम्मानित। हिन्दी साहित्य की सेवाओं के लिए नार्थ कैरोलाईना में नागरिक अभिनंदन। हैरिटेज सोसाइटी (नार्थ कैरोलाइना) द्वारा 'प्रतिष्ठित कवियत्री, वर्ष 2005' से सम्मानित।